सुनिए शिक्षक जी....

ऐसे क्यों हमारे शिक्षक ?

ऐसे हो हमारे शिक्षक

सुनिये...
शिक्षक जी

अपनी बात

शिक्षक हमारे आदर्श होते हैं। हम बड़े होकर उन्हीं की तरह बनना चाहते हैं। पर क्या गुरुजन अपने व्यवहार को बच्चों की अपेक्षाओं के अनुरुप बना पाते हैं। किलकारी में कार्य करते–करते यह पता लगाने की इच्छा प्रबल होने लगी कि बच्चे अपने लिए कैसा शिक्षक चाहते हैं?पर समस्या यह थी कि बच्चे अपनी बातों को किससे खुलकर कह सकेंगे? संभवतः प्रश्न करने वाले भी बच्चे ही होने चाहिए। मैंने किलकारी के कुछ पुराने बच्चों से बातचीत की और उन्हें शहर के विभिन्न सरकारी स्कूलों में जाकर वहाँ के बच्चों से इस सवाल का जवाब लाने की जिम्मेवारी सौंपी।

किलकारी के बच्चो को कार्य के दौरान क्या अनुभव हुए यह आप उन्हीं की जुबानी सुनें, तो बेहतर है। किताब में बच्चों के इन्हीं संकलित विचारों को पेश करने की कोशिश की गई ताकि शिक्षक बच्चों के प्रति अपने व्यवहार की समीक्षा कर सकें तथा उसे और बेहतर बना सकें।

इस सन्दर्भ में बच्चों द्वारा जो भी बातें बताई गई, उन्हें किलकारी के सृजनात्मक लेखन के बच्चों ने श्लोगन में बाँधने का प्रयास किया। दूसरी ओर चित्रांकन के बच्चों के द्वारा कार्यशाला करके कार्टून बनाये गये, तब कहीं जाकर यह किताब एक आकार ले पाई। उम्मीद है शिक्षकों के लिए यह किताब उपयोगी होगी। तो जल्दी पन्ने पलटिये और जानिये कि बच्चे हमसे क्या चाहते है?

(ज्योति परिहार)
निदेशक
'किलकारी' बिहार बाल भवन

बच्चों की जुबानी

एक रोज ज्योति दी (निदेशक, 'किलकारी' बिहार बाल भवन) ने हमें अपने केबिन में बुलाया। बैठने का इशारा करते हुए उन्होंने पूछा कि तुम्हें कैसे शिक्षक पसंद है और कैसे नहीं? हमने अपने विचार रखे। उसी पल उन्होंने कहा कि अब यही सवाल तुमलोगों को अलग–अलग विद्यालय के बच्चों से करने होगें और उनके जवाब लाने होंगे। उन्होंने कहा कि "किलकारी एक किताब निकालने का सोच रही है, जो बच्चों की पसंद एवं नापसंद के शिक्षकों पर आधारित होगी। इसके लिए हमें बच्चों के विचारों को जानने की आवश्यकता होगी। बच्चा ही किसी बच्चे के मन की बातों को समझ सकता है। इसलिए तुमलोगों को यह जिम्मेवारी सौंपी जाती है।

सर्वप्रथम दस सरकारी विद्यालयों (किलकारी बाल केन्द्र) के नाम हमें दिए गए। कुछ दिनों बाद हमनें अपना काम शुरू कर दिया। पहले स्कूल में जाने पर हमने सीधे ये सवाल बच्चों से किया। पाया कि वे जवाब देने में संकोच कर रहे थे। फिर हमलोग उनके साथ तरह–तरह के खेल–खेलने लगे, गाने–गुनगुनाने लगे, हँसी–मजाक करने लगे। इतनी जल्दी वो हमसे ऐसे घुल–मिल गए मानों हम उनके वर्षों पुराने दोस्त हों। सबने बिल्कुल वैसे ही जवाब दिए जैसे जवाब कि हमें आशा थी, हम सफल हुए थे। उनसे पुनः मिलने का वादा कर हम चल पड़े, दूसरे स्कूलों की तरफ! सारे स्कूलों में हमने ऐसे ही काम किया और ढेर सारे जवाब इक्कठा कर लिए।

इस दौरान हमने खुद भी बच्चों के प्रति शिक्षकों के व्यवहार को देखा। कहीं कोई शिक्षक बच्चों से इतना प्यार करते थे कि उनके साथ बैठकर खाते थे। कहीं कोई शिक्षक अपने जूठे बर्त्तन बच्चों से धुलवाते थे, चाय बनवाते थे, एक विद्यालय के शिक्षक ने तो हदकर दी, उनके कहने पर उनके घर कोयला न पहुँचाने पर उस बच्चे को बुरी तरह से हमारे सामने ही पीटा। इस बात ने हमें पूरा झकझोर दिया।

इस दौरान हमने कई परेशानियाँ झेलीं। विद्यालयों में बार–बार जाना पड़ा। किसी स्कूल में शिक्षक ही नहीं आए थे, तो किसी स्कूल की छुट्टी हमारे पहुँचने से पहले ही हो गई थी। इन सारी समस्याओं के बावजूद हमने अपना काम सफलता पूर्वक पूरा किया। मगर हमने सिर्फ अपना पहला पड़ाव पूरा किया था, असल काम तो अब शुरू हुआ था। सैकड़ों की संख्या में आए जवाबों में से चुनिंदा जवाबों को निकाला गया। इस प्रकार बहुत सारे बच्चों के साझे प्रयास से यह किताब बनकर तैयार हुयी है।

आकाश कुमार एवं रानी कुमारी

परिकल्पना
ज्योति परिहार

मुख्य पृष्ठ एवं ग्राफिक डिजाइन
उमेश शर्मा
सहयोग
जितेन्द्र कुमार

प्रथम संस्करण
वर्ष 2015

प्रकाशक
'किलकारी' बिहार बाल भवन
सैदपुर,राजेन्द्र नगर,
पटना–800004

मुद्रक
इंडियन आर्ट्स ऑफसेट,
बेसमेन्ट ऑफ एस.बी.आई.,
महेन्द्रू, पटना–800006

मूल्य
₹ 300/-

ISBN - 978-81-927174-4-9
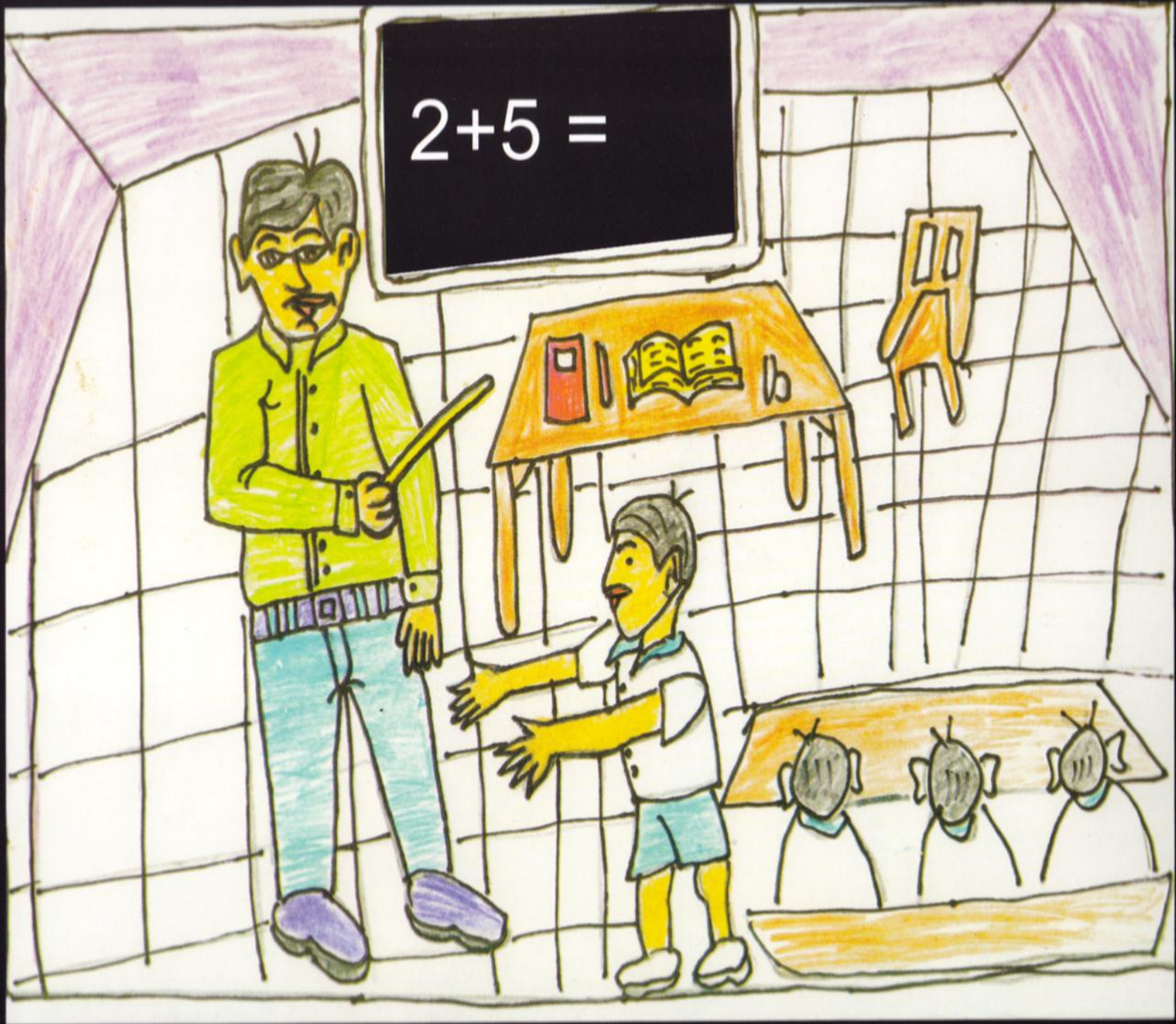
रौब दिखाने वाले

बात-बात पर झड़प के हमको

अपना रौब चलाओ न,

हम भी अच्छे बन सकते हैं

प्यार से तुम समझाओ न.

नाम बिगाड़ने वाले

कैसे गुरुवर आप हमारे
अरे-तरे कर नाम पुकारे.

व्यक्तिगत कार्य कराने वाले

स्कूल में हम सब आते पढ़ने,

न कि टीचरजी का पानी भरने.

ध्यान न देने वाले

माना कम है हममें ज्ञान,

हम पर भी तो दे-दो ध्यान.

देर से आने वाले

हर दिन टीचरजी का

करते रहते हम वेट

रोज़-रोज़ टीचरजी

आते हैं लेट-सेट.

कॉपी न जांचने वाले

होमवर्क देने वाले मास्टरजी

पूछूं आपसे एक बात

दे-देते होमवर्क बड़े-बड़े,

पर देते नहीं क्यूँ जांच?

टहलने वाले

हाय! रे मैडम हाय!

कक्षा-कार्य देकर

बाहर टहलने जाए!

केवल लिखवाना

समझाते न बुझाते,

आ खाली लिखवाते.
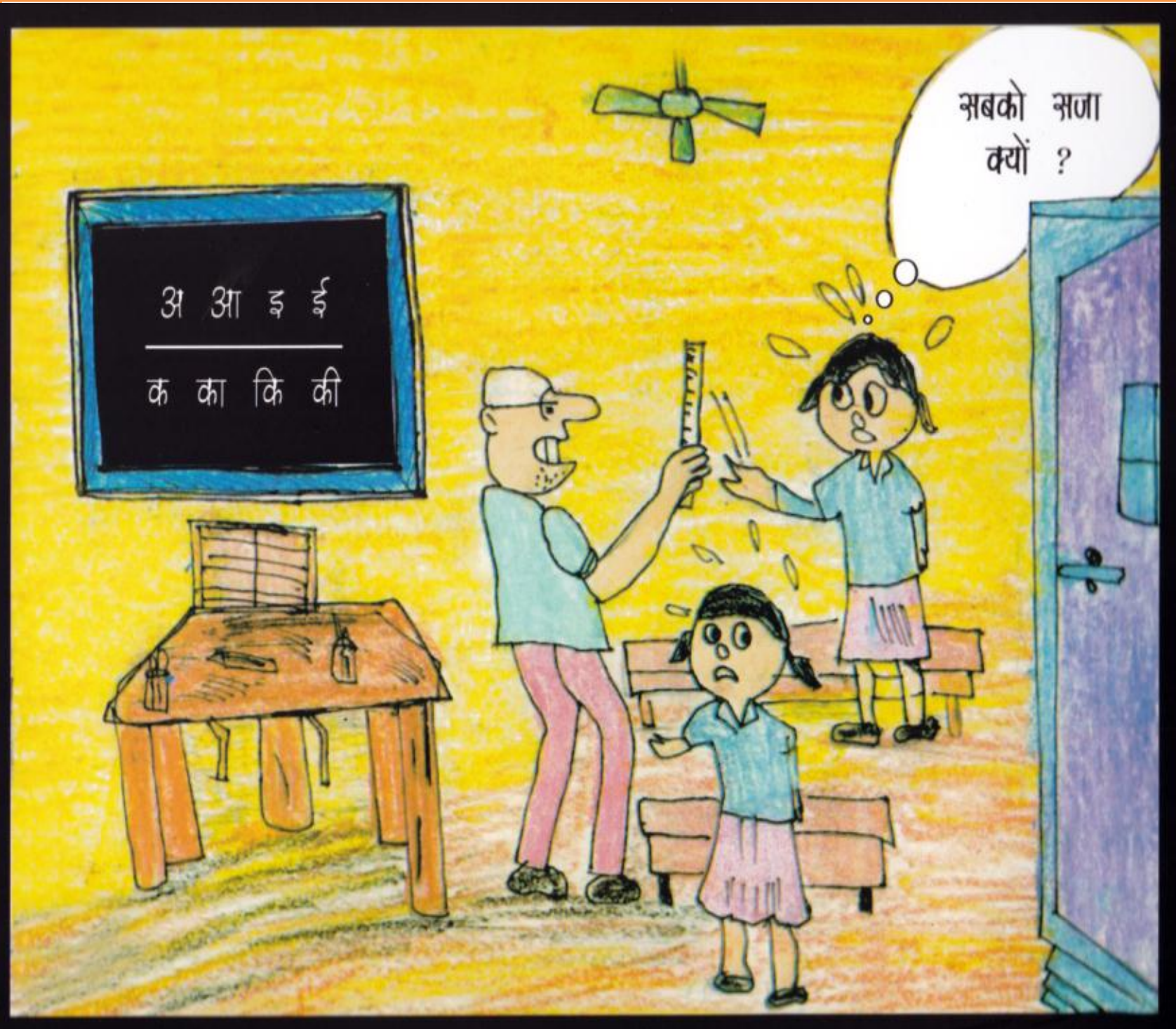
सज़ा

गलती करें एक

सज़ा पाएं अनेक.

इलज़ाम

चोरी नहीं है अपना काम,

हम पर क्यों देते इलज़ाम?

फोन पर बीजी

कक्षा में फोन पर बीजी

न रहो ओ टीचरजी!
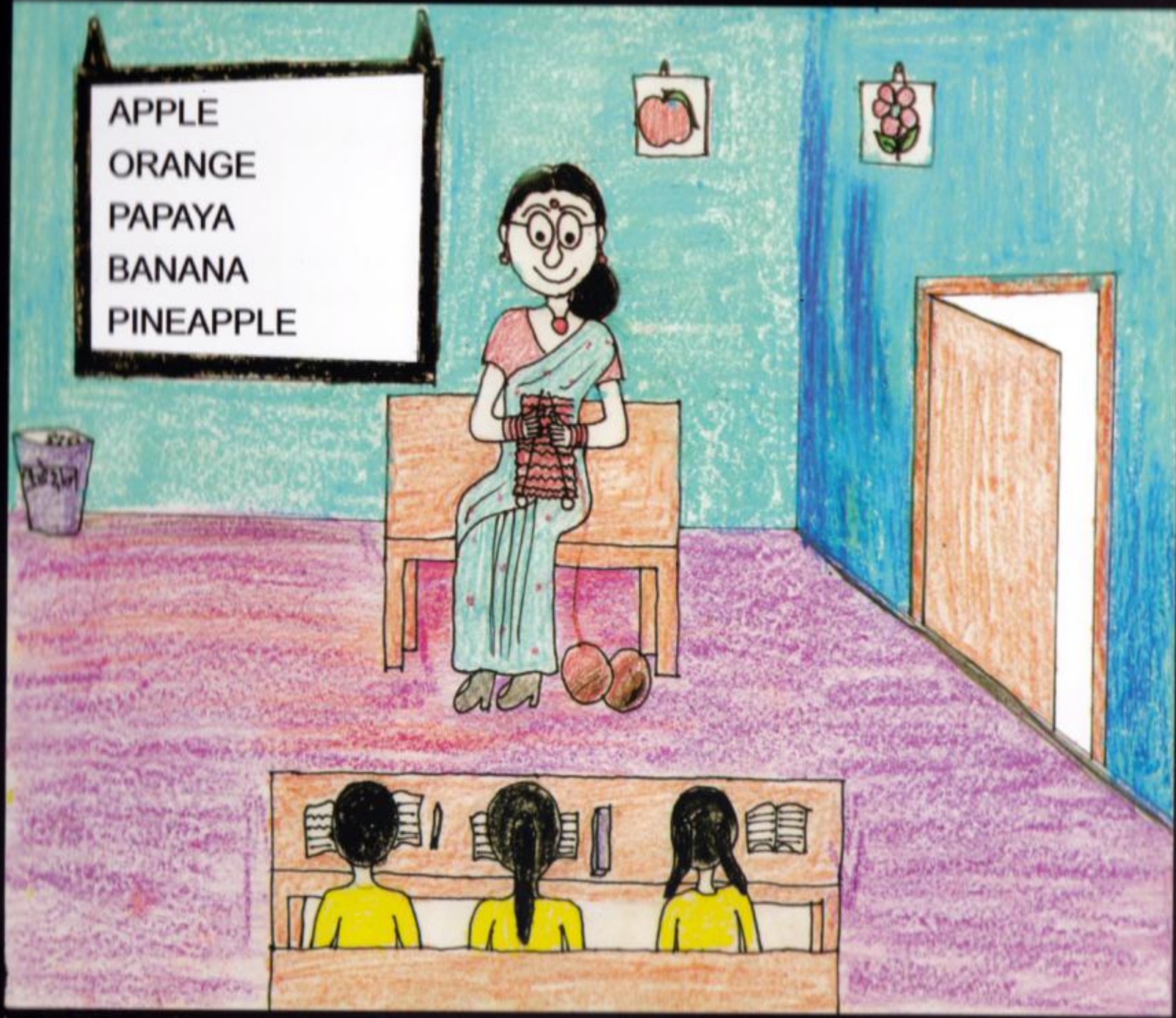
स्वेटर बुनना

देखो मैं बुन रही हूँ स्वेटर,

कहीं घर हो न जाए इधर-उधर.

ऊँघना

देखो टीचरजी ऊंघा रही हैं,

नई दुनिया बसा रही हैं.
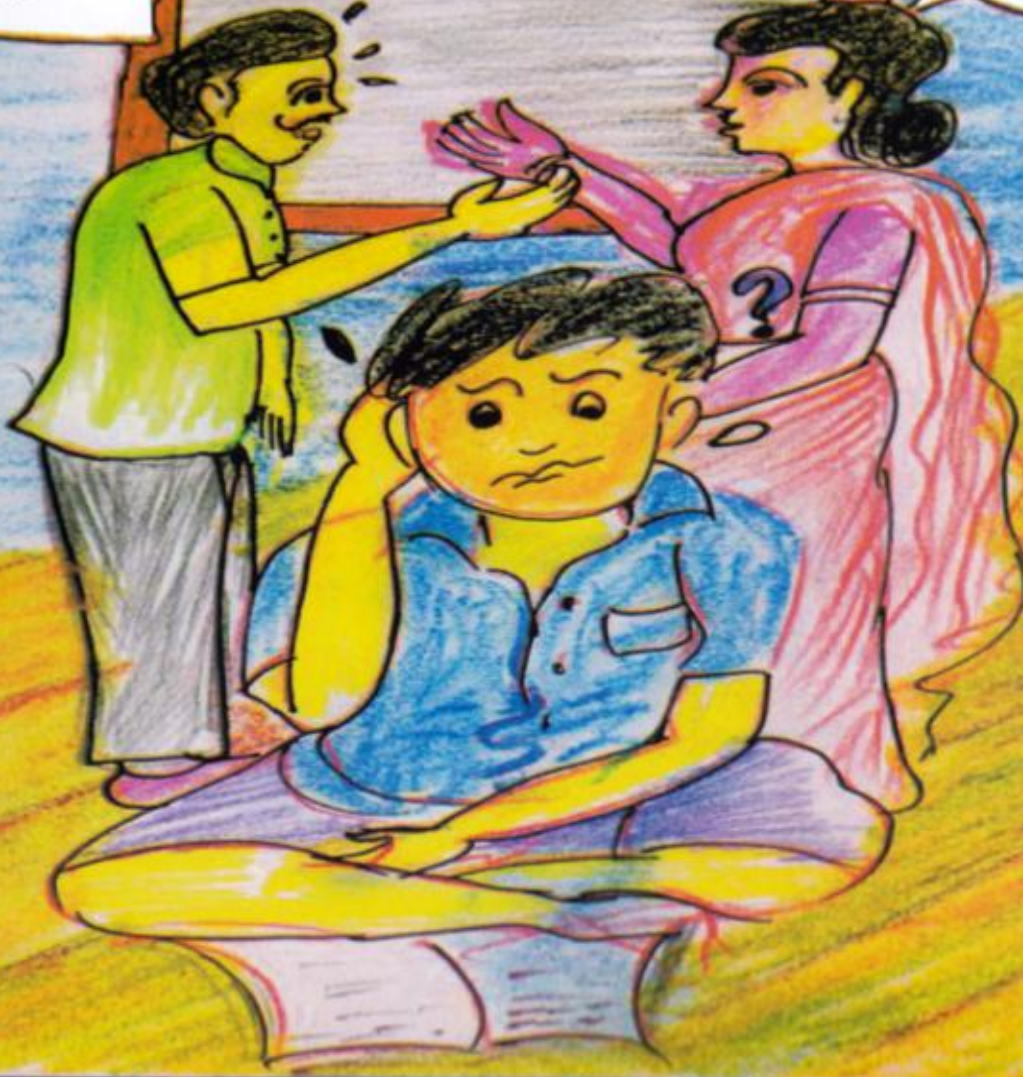
गुटबाजी

झगड़ा करें आपस में,

और झेलें हम बच्चे,

स्वभाव से ऐसे टीचर,

लगते नहीं हैं अच्छे.

ट्यूशन

स्कूल में नहीं पढ़ाते सर,

ट्यूशन में सब समझाते सर.

कान खींचना

नहीं करेंगे अब ज़्यादा चीं-चों

टीचर-टीचर! कान न खींचो.

धूम्रपान

धूम्रपान घातक है

हमें ये सिखाते हैं.

क्या सीखेंगे बच्चे

जब खुद ही खैनी खाते हैं.

धूप-सेंकना

टीचर धूप सेंकते रह जाएँ,

मॉनिटर तंग-तंग हो जाएँ.

प्रश्न करने पर डाँट

बार-बार आते हैं,

प्रश्न हमारे अंदर.

इस पर मत डाँटो टीचरजी,

क्योंकि हम हैं मस्त कलंदर.

गुस्सा

हाथ में डंडा, आँखों में गुस्सा,

नहीं चाहिए शिक्षक ऐसा.

बोर्ड का न इस्तेमाल

टीचर हों हमारे ऐसे

करें बोर्ड का जो इस्तेमाल

कहीं हम बच्चे रह न जाएँ

धूल फांकते सालों-साल.

माहौल बिगाड़ना

उनसे कुछ पूंछे तो

लगा देते हैं झाड़,

माहौल बनाने की बजाए,

पूरी कक्षा देते बिगाड़.

डांटने वाले

बात-बात पर छड़ी दिखाये,

देर से आने पर डांट लगाये.

लड़का-लड़की में भेद

घर में भी मिलता अब,

लड़कियों को बराबरी का दर्ज़ा.

फिर स्कूल में क्यों टीचरजी,

लगाते सिर्फ लड़कों पर ऊर्जा.

उदाहरण देना

इतिहास, भूगोल और विज्ञान

अब न हमको और रटाओ.

ओ टीचरजी करो मेहरबानी

उदाहरण देकर हमें पढ़ाओ.

ऐसे हो हमारे शिक्षक

समय का पाबंद

समय से आने वाले -

हों हमारे टीचर.

इनसे न डर, न भय

हो हमारे भीतर.

प्रोत्साहन

उत्साह बढ़ाएं हमारा

हमें थपकी देकर,

हम बच्चे बनें महान

सीख गुरु से लेकर.

खेल

खेल-खेल में टीचरजी

हमें पाठ पढ़ा दें,

हर विषय में नम्बर आएं

ऐसा हमें बना दें.

दोस्ती

हमारे संग बन जाएँ बच्ची,

मिस हों हमारी दोस्त अच्छी.
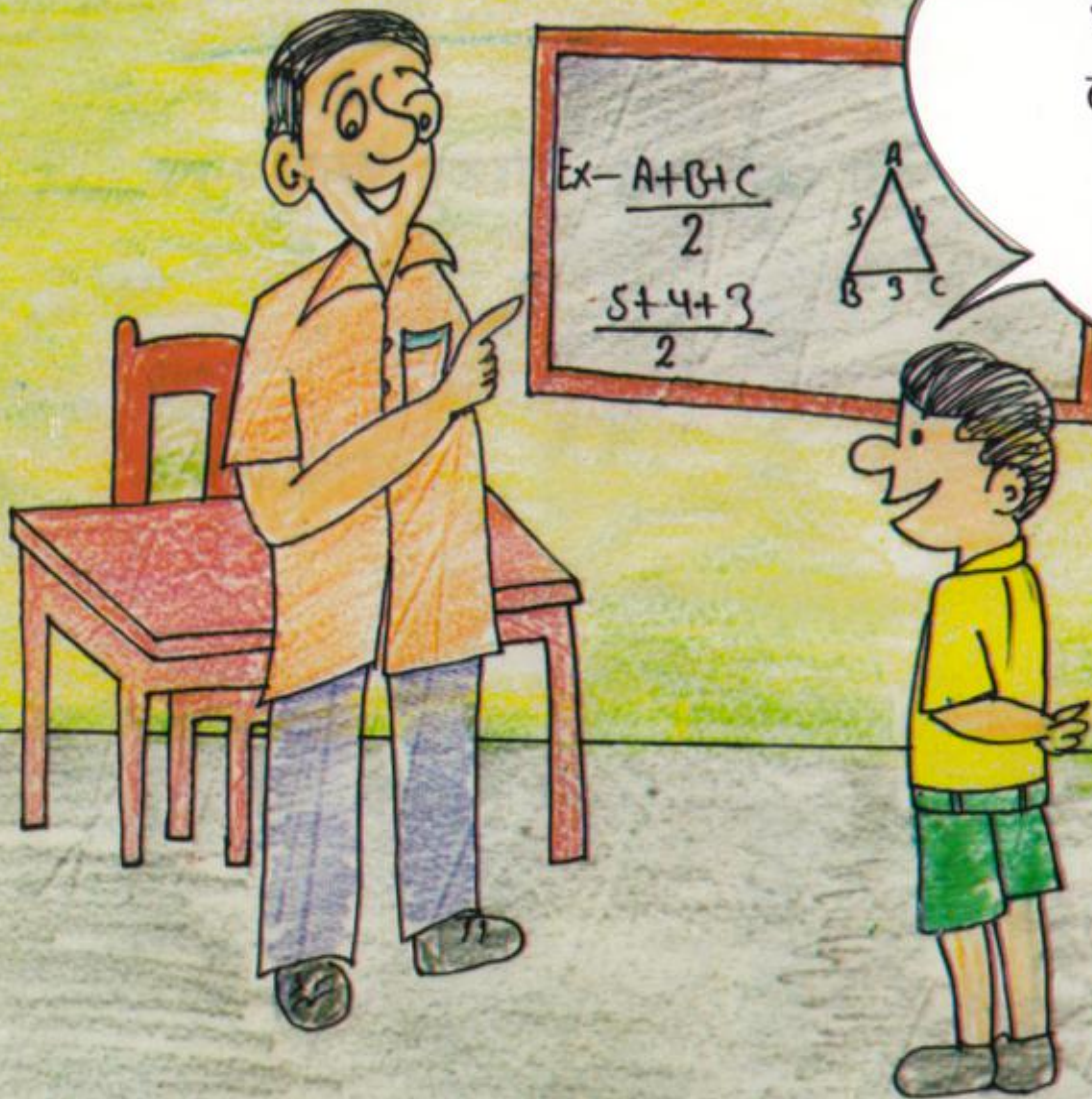
फिटफाट

कक्षा चले तरीके से

टीचर हों सलीके के

फिट रहेंगे टीचर जब

नहीं लगेंगे फटीचर तब.

शुद्ध भाषा

ऐसे टीचर की

हमें है आशा,

बोले हरदम शुद्ध

और सरल भाषा.
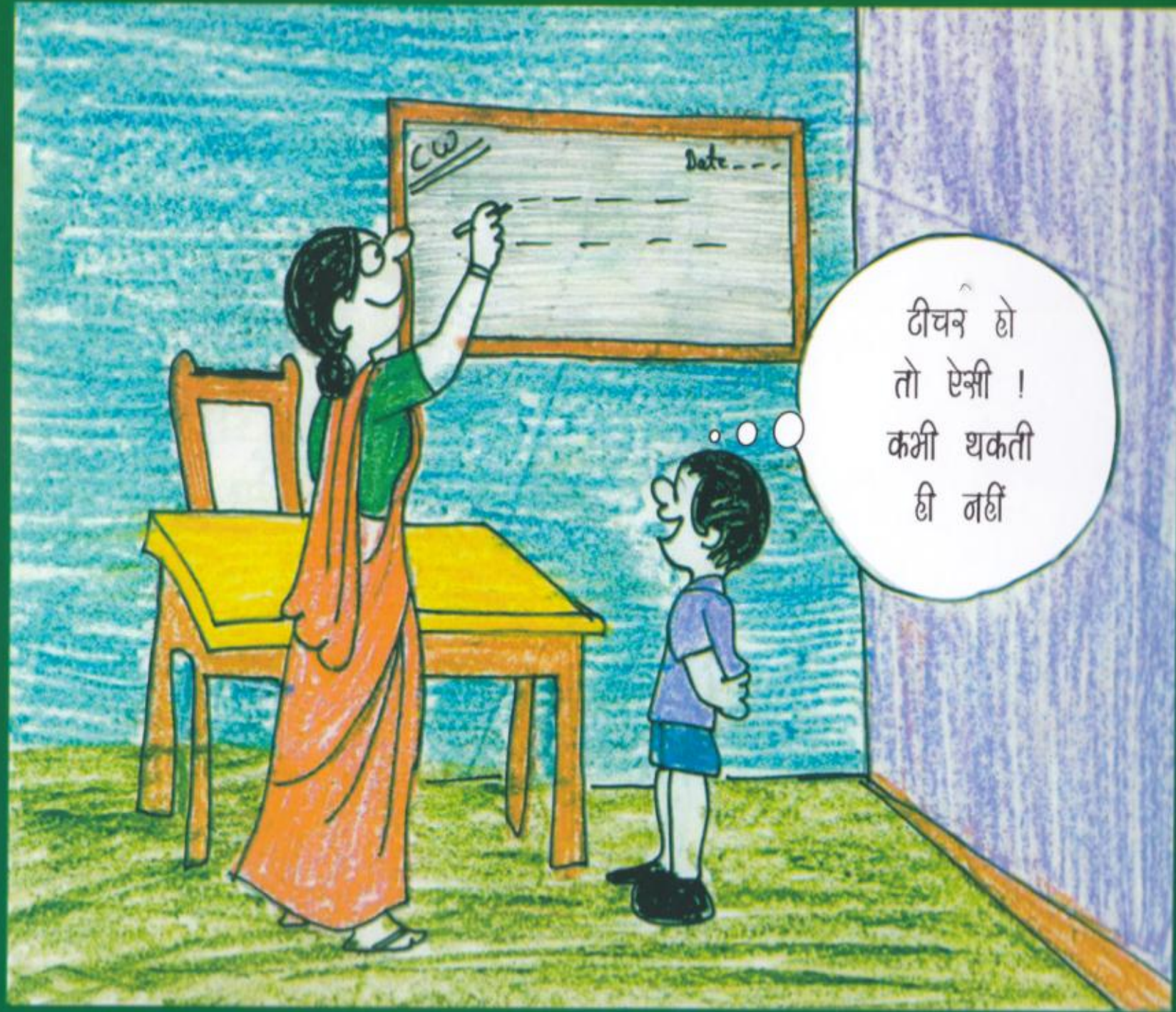
ऊर्जावान

टीचर जब हों ऊर्जावान,

शिक्षा तब धरती-परवान.

प्यार

दुःख-दर्द में हम बच्चों को

टीचरजी का मिले सहारा.

इसी तरह हम लोगों को -

मिले प्यार ढेर सारा.

कमज़ोर बच्चों पर ध्यान

अच्छे-अच्छे कामों पर,

करें मेरा सम्मान,

कमज़ोर बच्चों का भी,

करें नहीं अपमान.

विश्वास

बच्चों में विश्वास

जताने वाले.

मीठी भाषा

मीठी-मीठी वाणी हो

नित रचते नई कहानी हों.

प्रसन्नचित्त

चेहरों पर हंसी लेकर,

वर्ग में शिक्षक आएं.

रोज़ नए विश्वास से

हम बच्चों को पढ़ाएं.

सरल कर समझाए

कठिन से कठिन विषय को भी

जो सरलता से हमें समझाए

ऐसे शिक्षक सब को भाएँ

जो गणित का भूत भगाएं.

सुनना

अपनी झूठी तारीफ में कोई

शब्दों के बड़े जाल न बुने

शिक्षक तो ऐसे पसंद हैं हमको

जो धैर्य से हमें सुनें.

मन की बात समझना

टीचरजी एक ऐसे आवे,

बिना डाँट के हमें पढ़ावे.

मन में मेरे जो चलता हो,

चेहरा देख समझ वो जावे.

शाबाशी

हम बच्चे ज्ञान पाने को,

हर दम रहते हैं अभिलाषी,

करते जब अच्छे काम,

टीचर हमें देते शाबाशी.

'किलकारी' बिहार बाल भवन

परिचय :
बिहार सरकार के शिक्षा विभाग ने 'किलकारी' नाम से बिहार बाल भवन की स्थापना 30 मई, 2008 को की। इसका पंजीकरण, सोसाइटी रजिस्ट्रेशन एक्ट 21, 1860 के तहत हुआ है। 'किलकारी' बच्चों की सृजनशीलता को उभारने का प्रयास करती है। 'किलकारी' 08 से 16 वर्ष तक के बच्चों को सीखने के लिए स्वस्थ, तनाव रहित एवं आनन्दमय प्रदान करती है। यहाँ बच्चों को उनकी रूचि के अनुसार प्रशिक्षण तथा प्रस्तुति के लिए मंच दिये जाते हैं ताकि उनमें आत्मविश्वास जागृत हो सके। यह बाल भवन बच्चों को उन अवसरों को उपलब्ध कराने का प्रयास करता है, जिससे वे अपने घर एवं विद्यालय में वंचित रह जाते हैं।

लक्ष्य :
बच्चों के सृजनात्मक विकास में सहायक अवसर एवं वातावरण प्रदान करना।

उद्देश्य :
बच्चों की आवाज की सुनवाई हो। उन्हें अपनी क्षमताओं को पहचानने का अवसर मिले। सृजनात्मक एवं वैज्ञानिक दृष्टिकोण विकसित हो। आत्मविश्वास एवं नेतृत्व क्षमता का विकास हो। व्यवहारिक ज्ञान एवं नैतिक मूल्यों का विकास हो।